

## पद १४७

(राग: जोगिया – ताल: धुमाळी)

क्या किसू से काम हमारा । लय लागा साहेब से हमारा । चैन नहीं  
दिन शाम हमारा ॥ध्रु. ॥ अंदर बाहर वोही नजर आवे । जहाँ देखो  
तहाँ राम हमारा ॥१॥ मानिक कहे सदुरु प्रताप से । मिल गया  
मंगलधाम हमारा ॥२॥